

काशी-साधारण्य

~~पुस्तक~~ साग

~~पुस्तक काशी दर्शन~~

काशी दर्शन

1718114-11510

10/11/11 11/11/11

11/11/11 11/11/11

काशी-सहिमा

यत्र कुत्रापि वा कक्ष्यां मरणे स भैरवः ।
जन्तोर्दक्षिण कर्णे तु मन्त्रारं समुपदिशत ॥

- काशी में जो मनुष्य किसी भी स्थान में
शरीर त्यागता है [अर्थात् मरता है] चाहे वह
प्राणी पापी क्यों न हो उसे शंकर भगवान्
उसके दहिने कान में तावक मन्त्र सुनाकर
मुक्ति देते हैं ।

विश्वेश्वरो यत्र न तत्र चित्रं चर्मार्थिकाभावात्
स्वयम्भूतः हिम विश्वकास्तस्मान्न काशी गम्यते ॥
॥ ७४ अ० काशी खण्ड अ० ३

- विश्वनाथजी काशी में चर्म, उर्ध्व, कर्मा
और मोक्ष को देने के लिए स्मृतिमान हैं
उन्हीं विश्वलग्न हैं ।
यहाँ काशी पुरी में मुक्तिलाभ यह कौन
उपद्रव्य की बात है क्योंकि वह विश्वनाथ
आवृत्त साच्चिदानन्द साक्षात् विश्वका
है उसी से ज्ञानोपपत्ति भी काशी के सम्पन्न
नहीं है और उसी कारण से यह काशी
सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है ।

- ब्रह्मज्ञानं तर्कवदं काशी संस्थितिमागताम् ।
पिरामि तारकं प्राप्ते मुच्यते ते तु तदाकाले
काशी खण्ड १६ अ० ३२ ॥

1131H - 115 10P

1. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

2. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

3. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

4. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

5. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

6. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

7. 1131H - 115 10P 1131H - 115 10P

भावार्थ - विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं
 स्वभाव संनैमिष-चञ्चल है मनुष्य
 को कलियुग में ब्रह्मज्ञान का उपदेश करा
 हो सकता है उसी कारण से मैं काशी में
 अन्त समय ब्रह्मज्ञान का उपदेश करता हूँ
 अतएव काशीनगरी (जहाँ अन्त समय का
 ब्रह्मज्ञान रूप लयक मान के उपदेश से
 उसी क्षण मुक्त हो जाते हैं और सबसे
 बड़ी विरोधता ल गह है कि काशी में
 मरने वाले कैसे भी पापी हो दुराचारी,
 चारिहीन, चाडला-लेन न हो और
 चाहे पुण्याला हों सबको भी भगवान्
 विश्वनाथ मिले ही प्रकार की मुक्ति
 देते हैं ॥

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवां प्रति प्रतिज्ञाद्वयम् ।
 जीवतोऽन्नं ददासि (वं मृते मुक्तिं ददाम्यहम् ॥

अर्थ - काशी में विश्वनाथ जी और पार्वती जी की
 दो प्रतिज्ञा है कि प्राणी को जीवन काल में
 (अन्न) आप (अन्नपूर्ण जी) दें तथा मृत्यु के
 पश्चात् स्वयं साक्षात् विश्वनाथ जी उसे मुक्ति
 देंगे ।

इस प्रकार भगवान् विश्वनाथ की स्वयं प्रतिज्ञा
 है कि काशी क्षेत्र में मरने वाले जीव को वह मुक्ति
 (मोक्ष) प्रदान करेंगे । किन्तु काशी क्षेत्र में सत्संग
 पूजन स्नान दर्शन जप कीर्तन आदि साधारण
 यैम है । काशी में कुंभ देवताओं के दर्शन निष्प्रयात्र
 अकिन्तु हैं । पर ऐसा सम्भव नहीं है कि काशी में
 रहकर कोई दुराचार को जीव हत्या करे कृपानान् प्रकार के
 पापान्चार करे, फिर भी उसे मुक्ति मिले । स्वयं

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

आजामिल का दृष्टान्त है कि उसके अनेक पाप होने पर भी अन्त समय वह सबुद्धि हुआ और आत्मा से ईश्वर का नाम लिया तो मुक्ति का पात्र हो गया। इसी प्रकार काशी के बारे में निम्न लिखित श्लोक पुराणों में अंकित हैं।

अवश्यं काशिका सेव्या सर्वकर्मनिवारिणी ।
मानुष्यमप्राप्य ये मूढानिमेवमिह जीवन्तम् ।
न सेवन्ते पुरीं काशीं ते मुष्टामन्दमुदयः ॥

(काशीरत्नण्ड अ० ६५ श्लो०
४६)

अर्थ - कार्तिकेय जी आगस्त जी से कहते हैं - सभी कर्मों का निवारण करने वाली काशी की सेवा अवश्य करनी चाहिए। क्षणमात्र जीवन वाले मनुष्य जन्म को प्राप्त कर जो काशी वास नहीं करता है, वह मन्दबुद्धि प्रायः जीवन से हाव द्यो लिख।

अर्थ - कार्तिकेय जी कहते हैं - इस काशी में एक मात्र मुक्ति देने वाले भगवान् विश्वनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। और वे ही काशी को प्राप्त कराते हैं तथा काशी में मुक्ति भी देते हैं ॥

...
...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

कृपा से काशी भी प्राप्त हो जाय तो वे मुक्त
ही हैं। इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है।

पादुभिः प्राप्यते मुक्तिः काश्यां मोक्षोत्तमोत्तमः ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यपूर्वपुनः पुनः ।
न काशी सा दृशी मुक्त्यै भूमिरन्यामहोतले ।
विश्वेशो मुक्तिदो नित्यं मुक्त्यै चोत्तरवाहिनी ॥

(स्कन्द पुराण काशीखण्ड अ० ७६)

अर्थ - स्कन्दजी आगराजी से कहते हैं। काशी
में जिन निष्ठाओं से उत्तमोत्तम मोक्ष की प्राप्ति
होती है वे निम्नालिखित हैं। सत्य पूर्वक त्रिवार
सत्य है क्यों कि पृथ्वी तल पर मुक्ति प्रदान
करने वाले काशी के समान कोई अन्य पुरी नहीं।
काशी में मुक्ति देने वाले भगवान् विश्वेश्वरनाथ
जी हैं और उत्तरवाहिनी भगवती गङ्गाजी हैं।

एक एव हि विश्वेशो मुक्तिदो नान्य एव हि ।
स एव काशी प्राप्या मुक्तिं घट्टति नान्यतः ॥

(काशी खण्ड अ० ७६ श्लोक ५४)

अर्थ - कार्तिकेय जी कहते हैं - इस काशी में
एक मात्र मुक्ति देने वाले भगवान् विश्वनाथ
जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। और वे ही काशी
को प्राप्त कराते हैं तब काशी में मुक्ति
भी देते हैं ॥

२ लोकावां २ लोकपादं वा नित्यं काशीमृतम् ।
 पितृन्नि ये महाभागस्तेषां भीतिर्न भैरवी ॥
 (काशी रहस्य)

अर्थ - काशी रहस्य का आधार श्लोक अर्थात् दो पाद
 अर्थात् एक पाद नित्य काशी की कथा सुनता या
 कहता है। ऐसे भाग्यशाली पुरुषों को जम से
 भय कौन करे काशी में मरने से भैरवी प्राप्त
 भी भोगनी नहीं पड़ती ।

महापातकमुक्तोऽपि पुण्यपादः कलामृतम् ।
 स मुक्तो मुक्तिं भाव्योति पुण्य सम्भार दुर्लभम् ॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)
 अर्थ - कोई भी महापातक से मुक्त भी हो और
 काशी रहस्य की कथा सुने वह पुण्य अधिक है
 भी न प्राप्त होने वाली मुक्ति को प्राप्त करता है ।

काश्यां निराजमानस्यं
 काशीनामोति निश्चितम् ।
 प्राप्नोति काशीनामो हि,
 दौघतां शरणागतिम् ॥

अर्थ - काशी में निराजमान काशी विश्वनाथ जी
 हैं घटनाम निश्चित है, हे काशीनाम में
 आप को शरण में आया है मुझे शरणागति
 दौजिए घट प्रार्थना करनी चाहिए ।

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः

अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

जन्मान्तरसहस्रैस्तु षट्पापं पूर्वसञ्चितम् ।
 अनिमुक्तं प्रविष्टस्यै तत्सर्वं जतिक्षयम् ॥
 (काशी रहस्य)

अर्थ - सहस्रों जन्मों में जो पूर्वकृत पाप सञ्चित
 हैं वे सब अनिमुक्त काशीक्षेत्र में प्रवेश करने
 वाले को तत्काल दौड़कर चले जाते हैं ।

विशेष — कर्म तीन प्रकार के हैं सञ्चित पार-
 ब्ध और कृपमाण जिनमें पूर्वजन्म के किये
 हुए पाप अर्थात् सञ्चित पाप नष्ट हो जाते हैं,
 और पारब्ध कर्म के अनुसार काशीवासी को
 सुख दुःख मिलता रहता है ।

काशी काशीति काशीति रसनापदि संस्कृता ।
 पश्य कस्यापि भूषाच्छेत्स मुक्तौ नास्ति संशयः ॥
 (स्कन्द पुराण)

अर्थ - जिन मनुष्यों की जिहवा काशी काशी
 करती रहती है वह मुक्त हो जाता है इस
 पर संदेह नहीं करना चाहिए ।

काशी काशीति काशीति जपतो पश्य सांस्वतिः ॥
 अन्धतापि सस्तरस्य पुरी मुक्तिं प्रकाशते ॥
 (स्कन्द पुराण)

अर्थ - काशी काशी जपता हुआ जो व्यक्ति
 जहाँ कहीं भी मर जाता है, उसको भी
 काशीपुरी मुक्ति प्रदान करती है ।

I. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$
 II. $\frac{1}{x^3} = x^{-3}$
 (उत्तर: 1, 2)

१. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ३. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ४. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ५. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ६. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ७. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ८. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ९. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 १०. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846.

दुर्लभं जन्म मानुष्यं दुर्लभं कारिकापुरी ।
उभयोः सङ्गमाद्यद्य भुक्ता एव न संशयः ॥

(शिवपुराण)

अर्थ - मानुष्य की देह (शरीर प्राप्त करना) पाना दुर्लभ है। मानुष्य देह पाने पर भी काशी मिल जाना परम दुर्लभ है। और यदि मानुष्य कारिका-स करे तो उसे मुक्त ही समझना चाहिए।

वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणानामिदं तथा ।
क्षेत्राणां चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा ॥

अर्थ - जैसे भगवान् विष्णु के भक्तों में भगवान् शङ्कर अग्रगण्य हैं। वैसे ही पुराणों में स्कन्द पुराण का काशी रहस्य खण्ड अग्रगण्य है। और जितने भी मुक्तिप्रद क्षेत्र हैं उन सबों में सबसे उत्तम काशी क्षेत्र है।

पुरोहितेन सहितस्तोषयामास शङ्करम् ।
अविमुक्ते महाक्षेत्रे तौषितस्तेन शङ्करः ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - किसी ने पुरोहित को आगे करके भगवान् शङ्कर की आराधना की। महाकाशी क्षेत्र अविमुक्त में तपस्या किया उस तपस्या से भगवान् शङ्कर परम प्रसन्न हुए।

[illegible][illegible]

1. $\frac{1}{2} \frac{d}{dt} \left(\frac{1}{2} m v^2 \right) = \frac{1}{2} m v \frac{dv}{dt}$
2. $\frac{1}{2} m v^2 = \frac{1}{2} m v_0^2 + \frac{1}{2} m v_1^2$

[illegible]

(1075 1075)
 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075
 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075
 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075
 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075 1075

विना काशीं न मे स्वानं विना काशीं न मे रीतिः ।
 विना काशीं न निर्वाणं सत्यं सत्यं वदाम्भट्टम् ॥
 (स्कन्दपुराण)

अब - शङ्करजी पार्वतीजी से नाते - काशी के
 विना मेरा दूसरा कोई स्वान नही है। और
 काशी को छोड़कर अन्यत्र मेरा मन भी नही
 लगता और विना काशी के मोक्ष भी जही
 मिलता यह मैं परम सत्य कह रहा हूँ। अतः
 काशी में ही मोक्ष प्राप्त होता है।

महापापौघशमनीं पुण्योपचयकारिणीम् ।
 मुक्तिं मुक्तिं प्रदामि नैको न काशी सुधीः बुधेति ॥
 (काशी मोक्ष निर्णय)

अब - काशी महापाप के समुदाय को शान्त कर
 देती है और जहाँ पुण्य की वृद्धि होती है।
 और अत्र मैं मुक्ति मुक्ति दोनों देती है फिर
 कौन ऐसा विद्वान होगा जो काशी का परित्याग
 कर दे।

श्रुति स्मृति पुराणेषु सर्वशास्त्रेषु पार्वति ।
 काशी ब्रह्मेति निरव्ययं तदवस्य प्राच्यतेऽत्र हि ॥
 (काशी मूलरहस्य)

अब - हे पार्वति श्रुति स्मृति पुराणों और सर्व
 शास्त्रों में काशी को ब्रह्म के रूप में माना गया
 है। यहाँ (काशी) ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

(१०७७१३५३)

(१०७७१३५३)

(१०७७१३५३)

देयं भैरवकृपा रत्नं आव्यं अवणमङ्गलम् ।
काशी रहस्यमतुलं नाना रत्न समुद्भूतम् ॥

(काशी मूल रहस्य)

उर्ब - ~~महापात~~ शिव योगी कहते हैं - हे महापति
(काशी को) यह कृपा रत्न जो सुनने वालों के लिए
परम मङ्गल देती है वह सुनाइये, वह अतुलनीय
काशी रहस्य है, जो मंदिरे कि वह अनेक रत्नों
का गुच्छ है।

महापातक पुत्रोऽपि जृणुयाद्यः कृपा मिमाम् ।
गुरु सेवा पुराणस्य अवणं चेन्नृणां भवेत् ॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

उर्ब - महापातकी भी यदि काशी रहस्य कथा
को सुनता है तो उसे गुरु सेवा का उचाना पुराण
अवण का फल प्राप्त करता है।

विश्वेश्वरो धत्र न तत्र चित्रं,

धर्मविक्रमामृतस्वरूपः ।

गुरुः पिता गुरुमीता गुरुरेव परः विनः ।

(काशीखण्ड)

उर्ब - स्कन्दजी आगरतजी से कहते हैं - धर्म,
उर्ब, काम अमृत स्वरूप है विश्वेश्वरजी हैं
नहीं हैं, वह स्थान आश्चर्य जनक ही होगा।
गुरु ही पिता गुरु ही माता और गुरु परम
शिव है।

1. *[Faint handwritten text]*

(*[Faint handwritten text]*)

2. *[Faint handwritten text]* - *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] (*[Faint handwritten text]*)
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*

3. *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] (*[Faint handwritten text]*)
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* - *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*

4. *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
(*[Faint handwritten text]*)

5. *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*
[Faint handwritten text] *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]* *[Faint handwritten text]*

एक रात्रं शिवता ये तु पुण्यसम्भासनाः ॥
तेषाम्प्रवर्तते निव्यं मासं न त्सरक्रमैः ॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण)

उक्ति - अनेक जन्म के अपने पुण्य भार की कृपा से जो एक रात्र भी कशी निवास करते हैं, उनको निश्चित है कि मास वर्ष के अनुसार क्रमशः फल प्राप्त होता है।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जन्नी यथा ।
पुत्रस्य जन्नी लोकैः सर्वदा हितकारिणी ॥
हितकृत् सर्वजन्तूनां काशी हाऽमुत्र सिद्धिदा ॥

(मद्भग पुराण)

उक्ति - महाक्षेत्र अविमुक्त सदा माता के समान हितकारी है। जैसे माता पुत्र के लिए सर्वदा हितकारिणी है, वैसे समस्त प्राणीओं का हित करने वाली काशी इस लोक और परलोक में सुख देती है।

शिवरूपा महादेव तत्पापं शान्तिमेष्यतु ।
काश्यां स्थल-चराः कीटाः पादयन्त्रिन सहताः ॥

(शिव रहस्य)

उक्ति - काशी में पैदल-चलने से जो कीट पैरों के नीचे दबकर मर गये हैं और उनके मरने से जो हमें पाप लगा है, वे सब शिव रूप हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे हमारे अपराध को क्षमा करके हमें शान्ति दें।

1. *[Faint handwritten text]*
2. *[Faint handwritten text]*
(*[Faint handwritten text]*)

[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
1. *[Faint handwritten text]*

1. *[Faint handwritten text]*
2. *[Faint handwritten text]*
3. *[Faint handwritten text]*
(*[Faint handwritten text]*)

[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]

1. *[Faint handwritten text]*
2. *[Faint handwritten text]*
(*[Faint handwritten text]*)

[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
[Faint handwritten text]
1. *[Faint handwritten text]*

वसन्ति काश्यां स्व निमुक्ति कामाः ।

कामाग्निसम्प्राप्तमहत्प्रभावाः ।

दूरवाटिकाशीरमेते न जन्वन्

तीर्थेषु-चाप्येषु सदैव तेष्वात्म ॥

वसन्ति पापा नटिकाशिकायां

वसन्ति-चेदत्र मृतिर्न जायते ॥

(कशीमूल एहम्)

उर्ब - काशी में मुक्ति की अभिलाषा से लोग
वसते हैं। और कामाग्निसम्प्राप्तमहत्प्रभावा जी
शिव उन्हें महाप्रभाव भी देते हैं। काशी
देख कर पापी अन्धत्र तीर्थों में आनन्द नहीं
पाता। काशी में पापी नहीं वसते और यदि
वास करते भी हैं तो उनकी मृत्यु काशी में नहीं
होती ।

पूजयित्वा महोदेवं कशीनाथं जगद्गुरुम् ।

-चतुर्विधश्च ये जीवा ये च वेदाध्यायिणः ॥

ते ह्येव मुक्तिमाप्नुयन्ति काश्यां स्वानरजंगमाः ।

उर्ब - जगद्गुरु कशीनाथ महोदेव जी की जो लोग
पूजा करते हैं। वे चार प्रकार के जीव-चार प्रकार
के वेद वे सब स्वानर जङ्गम काशी प्राप्त कर
मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं ।

इत्याद्याः कौटिसंख्याश्च मुनयो दीर्घदर्शिनिः ।
 भस्मोद्धालितसर्नीङ्गस्त्रिपुण्डाङ्कितमस्तकाः ॥१॥
 (काशीमूलरहस्य अ० १)

अर्थ - शिव प्रोगी मानपात्रा से कहते हैं - काशी
 में महर्षि और दीर्घदर्शी मुनि करोड़ों की
 संख्या में हैं। वे सब भस्म से लिपटे हुए देह-
 वाले त्रिपुण्ड धारण करने वाले हैं।

विश्वनाथो ह्यहं नाथः काशिका मुक्ति काशिका ।
 सुधातरङ्गा स्वर्गङ्गा त्रयैषा किन्तु यच्छ्रुति ।
 प्रञ्चक्रीशपापरिमिता तनुरेषा पुरी माम् ॥
 (काशीखण्ड उ० ०५५ श्लो० ४२)

डा.ब. - मैं नाथ विश्वनाथ हूँ काशी मुक्ति काशिका
 है। स्वर्गङ्गा अमृत का तरंग है ये तीनों कथा
 नहीं दे सकती। प्रञ्चक्रीश पर्यन्त काशी
 मेरी शरीर रूपी पुरी है।

संसारभारविन्नानां पाताघातकृतां सदा ।
 एकैव मे पुरी काशी दुर्गं विष्णुमभूमिका ॥
 (काशीखण्ड उ० ०५५ श्लो० ४५)

डा.ब. - जो सदा संसार के पाताघात से विन्न
 है उनके लिए हमारे एक ही पुरी काशी
 विष्णुमभूमि है।

विनाकाशीं न रमते यतोऽन्यत्र त्रिलोचनः ।
 शम्भोः शक्तिरिदं काशीकान्तित्तो वैरगोचरा ॥२६॥
 (काशीखण्ड उ० ०४५)

डा.ब. - त्रिलोचन शंकरजी काशी से अन्यत्र
 नहीं रमते शंकरजी कोई विचित्र शक्ति
 घट काशी है। जिसको लोग नहीं जानते।

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज
ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिए
अनेक युद्ध लड़े, जिससे महाराष्ट्र का
राज्य बड़ा हुआ। (संस्कृत)

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज
ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिए
अनेक युद्ध लड़े, जिससे महाराष्ट्र का
राज्य बड़ा हुआ। (संस्कृत)

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज
ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिए
अनेक युद्ध लड़े, जिससे महाराष्ट्र का
राज्य बड़ा हुआ। (संस्कृत)

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज
ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिए
अनेक युद्ध लड़े, जिससे महाराष्ट्र का
राज्य बड़ा हुआ। (संस्कृत)

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज
ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिए
अनेक युद्ध लड़े, जिससे महाराष्ट्र का
राज्य बड़ा हुआ। (संस्कृत)

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज
ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिए
अनेक युद्ध लड़े, जिससे महाराष्ट्र का
राज्य बड़ा हुआ। (संस्कृत)

भूमिच्छापि न घात्र भूः त्रिदिनत्रोऽप्युच्चैर्यथा-
स्वाऽपि यथा ।
घा नद्धा भुवि मुक्तिदा स्फुरन्मृतं पश्यां मृताः ॥

अन्तः ॥

(काशी खण्ड अ० १ श्लो० ११)
अर्थ - घट काशी भूमि पर स्थित होकर भी
भूमि नहीं है नीचे रहकर भी स्वर्ग से उच्च है।
जब तक घट मुक्तिदा काशी है तब तक यहाँ मरनेवाले
जन्तु अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

~~भूमिच्छापि~~

घा नित्यं त्रिजगत्पवित्रतटिनीतीरे सुरैस्सेव्यते ।
सा काशी त्रिपुरारिराजनगरी पापपादपापहन्त्रा ॥

(काशी खण्ड अ० १ श्लो० १२)
अर्थ - जो काशी त्रैलोक्या पाविनी गंगा के तट
पर स्थित हो देवताओं से सेवित है। वह विश्वनाथ
भगवान की राजधानी बिनाश से जगत् की रक्षा
करे।

नामैच्छयेति गिजमात्रमध्यन्तघन्ताम् ।
संसारतारणक्षीमस्तजतपुरीं सः ॥

अर्थ - स्नेहदा से भगवान विश्वेश्वर (विश्वनाथ
जी) संसार को पार करने के लिए नौका के
रूप में इस काशी पुरी का निर्माण किया।

हृदि नैवेद्यं नैवेद्यं क्षेत्रे समोज्याः शिवयोगिनः ।
 कोटिभोज्यफलं सम्पद्यते कैकपरिसङ्ख्यया ॥
 (काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० १५५)

उत्तर - शिव योगियों को इस काशी क्षेत्र में भोजन
 कराना चाहिये । एक-एक शिव योगियों की संख्या
 में करोड़ों को भोजन करने का फल होता है ।

अथ निश्चेश्वरः, साक्षात्स्वानरात्मा जातप्रभुः ।
 सर्वेषां सर्वसिद्धिनां कर्तृभक्तिजुष्टामिह ॥
 (काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० १५६)

उत्तर - काशी में जात स्वामी साक्षात्स्वानरा-
 त्मा भगवान् निश्चेश्वरों के समस्त भक्तिभावों
 को सभी सिद्धि प्रदान करते हैं ।

आपराधि हि द्यौराणां काशी त्पाज्या न कुत्रचिन् ।
 यतः सर्वापदां हर्ता ताता निश्चयतिः प्रभुः ॥
 अवेन्द्यं दिनसंकुपल्लिनावदानजपादिभिः ॥
 (काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० १५७)

उत्तर - द्यौर आपाति आते पर भी काशी का त्याग
 न करें कपों कि सभी आपात्रियों के बिनाशक
 भगवान् निश्चेश्वर जी यहाँ निवास करते हैं ।
 अतः स्नान दान जपादि से दिनों को सफल
 बनाना चाहिये ।

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

ह्यस्मिन् कैवेरनेरे क्षेत्रे समोज्याः शिवयोगिनः ।
कोटिभोज्यफलं सम्यगेकैकपरिसङ्गया ॥

(काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० ७५)

अर्थ - शिव योगियों को इस काशी क्षेत्र में भोजन कराना चाहिए। एक-एक शिव योगियों की संख्या में करोड़ों को भोजन करने का फल होता है।

अथं विश्वेश्वरः साक्षात्स्वावरात्मा जगत्प्रभुः ।
सर्वेषां सर्वसिद्धानां कर्तृभक्तिजुष्ता मिह ॥

(काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० ७६)

अर्थ - काशी में जगत् स्वामी साक्षात् स्वावरात्मा भगवान् विश्वनाथों के समस्त भक्तिभावों को सभी सिद्धि प्रदान करते हैं।

आपद्यपि हि चौरायां काशी त्वाज्या न कुत्रचिन् ।
यतः सर्वापदां हर्ता तदा निश्चयपतिः प्रभुः ॥
अनेन्द्यं दिनसंकुपतिस्रानन्दान्नजपादिभिः ॥

(काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० ७७)

अर्थ - चौर आपत्ति आने पर भी काशी का त्याग न करें कपों कि सभी आपत्तियों के विनाशक भगवान् निश्चयनाथ जी यहाँ निवास करते हैं। अतः स्नान दान जपादि से दिनों को सफल बनाना चाहिए।

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

काशी लोचनमहामन्त्रोपेन जप्तः सन्निभ्यः ॥ ३६ ॥
 येन नीजाक्षर युगां काशीति हृदिधारितम्
 अवीजानि भवन्त्येव कर्म नीजानि तस्य वै ॥

(ओ ०६४ श्लो ०२६)

अर्थ - स्कन्दजी आगस्तजी से बोले - जिसने
 'काशी' इस दो अक्षर वाले महामन्त्र का जाप कर
 लिया है वह निभ्य अर्थात् मुक्त हो गया है
 जिसने इस गुणाल ~~मन्त्र~~ नीजाक्षर 'काशी'
 को हृदय में धारण करता है। उसके सभी कर्माज
 जो जन्म मरण के नीज (कारण) हैं निर्ज हो
 जाते हैं। अर्थात् कर्म करता हुआ भी वह कर्म
 बन्धन से मुक्त होकर जन्म मरण से रहित हो
 जाता है।

क्षेममूर्तिरिच्छां काशी क्षेममूर्तिर्भित्तान्भव ।
 क्षेममूर्तिस्त्रिपलगा नान्यत्क्षेमत्रयंकचिन् ॥ ३६ ॥
 येसाधिदेवशी भक्तिर्ममक्षेत्रेऽस्ति पावने ॥ ४१ ॥

(काशीखण्ड ओ ० ~~६४~~ ६४)

अर्थ - स्कन्दजी आगस्तजी से कहे - यह काशी
 क्षेम अर्थात् कल्याण की मूर्ति है तथा है निश्चय
 जी आप की भी कल्याण की मूर्ति है, एवं यह
 गङ्गा भी (क्षेम) कल्याण की मूर्ति है। अन्यत्र कृष्ण
 के आतिरिक्त ये तीनों साब-साब प्राप्त नहीं होते।
 और इस पावन काशी पुरी में जिसकी भक्ति होती
 है वह परम सत्त्व शरीर वाला होता है।

पुस्तक संख्या: १०८५
पुस्तक नाम: अष्टावक्र
लेखक: श्री १०८५
दिनांक: २०१५

पुस्तक संख्या: १०८५
पुस्तक नाम: अष्टावक्र
लेखक: श्री १०८५
दिनांक: २०१५

पुस्तक संख्या: १०८५
पुस्तक नाम: अष्टावक्र
लेखक: श्री १०८५
दिनांक: २०१५

जाने सन्त महाजात्राः क्षेत्रस्यैव निषेवणात् ।
 नीरजस्का विमर्शः संसाराण्विपारगाः ॥
 वाराणस्यास्तु ये भक्तास्ते भक्ता भगनिश्चितम् ।
 जीवनमुक्ता इति नूनं मोक्षलक्ष्म्या कटाक्षिताः ॥
 (काशी खण्ड अ० ६४ श्लो ०४२)

अर्थ - कार्तिकेयजी अगस्ती से बोले - काशी क्षेत्र की
 सेवा करने से सर्वार्थ निवास करने से मनुष्य सत्त्वमय
 हो जाते हैं। रजोगुण तथा तमो गुण से विमुक्त होकर
 वे संसार की सागर से पार हो जाते हैं।
 जो लोग वाराणसी (काशी) के भक्त हैं वे निश्चित
 ही मोक्ष भक्त हैं। तथा ऐसे भक्त जीवनमुक्त होते हैं।
 एवं शरीर त्यागोपरान्त उन्हें मोक्ष लक्ष्मी निश्चित ही
 तरण करती है।

मोक्षलक्ष्मीरियं काशी नयेद्यः परिराचते ।
 स्वर्गलक्ष्मीं काङ्क्षमाणेभ्यः पतितास्तेन संशयः ॥
 (काशी खण्ड अ० ६४ श्लो ०५०)

अर्थ - मोक्षलक्ष्मी यह काशी जिन्हें नहीं मन्चती
 है। जिन्हें नहीं प्रिय लगती है। तथा जो केवल
 स्वर्ग लक्ष्मी को ही चाहते हैं। वे पतित ही होते
 हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।



काशी' सङ्कातु माणानां पुरुषार्थ-चतुष्टयम् ।
 पुरः किङ्करं वर्तिष्येन्ममानुगृह्यते विजाः ॥
 (काशी खण्ड अ० ६४ श्लो ०५१)

अर्थ - विश्वनाथ जी अगस्ती जी से बोले - हे विज-
 गण ! जो भक्त काशी प्राप्ति की आकाङ्क्षा करते हैं।
 उन्हें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष-चारों पुरुषार्थ (किङ्कर)
 सेवक की तरह उनके सामने खड़े रहते हैं। क्योंकि
 काशीवासी लोग मुझसे अनुगृहीत होते हैं।

आनन्दकानने ह्यत्रज्ज्वलद्वावानलोऽस्म्यहम् ।
 कर्माणि जानिजन्तानां ज्वालायेन प्ररोह्ये ॥
 वस्तव्यं सततं काश्यां पश्येऽहं प्रपत्नतः ।

(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो ०५२, ५३)
 अर्थ - भगवान् शिव कहते हैं कि इस आनन्द
 कानन में मैं चक्षुःकन्ता हुआ दानानल (दानाग्नि)
 हूँ। अतः जीवों के कर्मबीज को भस्मसात् करता रहता
 हूँ। उन्हें उगने देता ही नहीं हूँ। अतः भक्तों को काशी
 में निरन्तर ही निवास करना चाहिए। तथा मेरी उपासना
 प्रपत्न पूर्वक करनी चाहिए।

चन्द्रामन्दकिरलक्ष्माणी ब्राह्मणाः काशिनारिणः ।
 प्रयं च चेतसो नृत्तेर्न दूरेऽहं न काशिका ॥
 दातव्यो वोतरः कोऽत्र विप्रतां मे यथा रुचि ।

(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो ०५५, ५६)
 अर्थ - काशीवासी मेरी भक्ति में (पारपूर्ण)
 संयुक्त ब्राह्मण चन्द्र हैं। आप जैसे भक्तों की चिन्ता
 होती है न मैं हर हूँ नहीं काशी। अतः आप लोगों की
 तर देना-चाहता हूँ। तो ले अपनी इच्छानुसार आप
 कौन सा तर-चाहते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीकृष्णाय नमः
(०२ अंश ४० ६ अंश १५)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - श्री
कृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - श्री
कृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - श्री
कृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः
श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः

कालिः कालः कृतकर्म त्रिकण्टकमितीरितम् ।
 एतत्रयं न प्रभवेदानन्दवनवासिनाम् ॥
 (काशी खण्ड)

उक्ति - कालि, काल और कृतकर्म इन तीनों का नाम त्रिकण्टक है काशी, आनन्दवनवासियों के लिए ये तीनों आविर्भूत (प्रकट) नहीं होते हैं।

ततो नैत-चरेत्पापं कायेन मनसा गिरा ।
 एतद्वृथा नैदानां पुराणानां द्विजोत्तमाः ॥
 मृतानां नै पुनर्जन्म न भूयो भवसागरः ।
 (शिव पुराण)

काशीवासी को पाप नहीं करना चाहिए-चोहे बट्ट देह से हो-चाहे मन से-चाहे नाणी से यही नैदां का पुराणों का रहस्य है यही मरनेवालों का पुनः जन्म नहीं होता। और नै पुनः भवसागर में भी नहीं फस्ते।

गङ्गा नृवरहा काश्यां लिङ्गं विश्वेश्वरं मम ।
 उभे विमुक्तिदे पुंसां प्राप्येदानवलात्कलो ॥

उक्ति - काशी में गङ्गा उत्तरवाहिनी है और मेरा विश्वेश्वर नाम का लिङ्ग है। कालिपुत्र में दान देने से प्राप्त होने वाले ये दोनों स्वान स्वयं प्राप्त हो जाते हैं।

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

५

जन्म मृत्यु भयंतीर्त्वा सा पाति परमां गतिम् ।
 नैः श्रेयसीं गतिं पुण्यां त्वा योगगतिं व्रजेत् ॥
 (मत्स्य पृ० अ० १२२ श्लो ०१३)

अर्थ - काशी में जन्म मृत्यु के भय को पार कर वह
 परमगति को प्राप्त करता है। नैः श्रेयस
 गति त्वा पुण्य भययोगगति को पा लेता
 है।

न हि योगगतिं दिव्या जन्मार्शो तैरपि ।
 प्राप्यते क्षेत्रमाहात्पात् प्रभावान्दकस्पतु ॥
 (मत्स्य पृ० अ० १२२ श्लो ०१४)

अर्थ - सैकड़ों जन्मों में भी दिव्य योगगति नहीं
 मिलती। किन्तु काशी इस क्षेत्र के प्रभाव
 त्वा भगवान् विश्वनाथजी की कृपा से वह
 मुक्ति को पा लेता है।

आदेहपतनादपान्त्रक्षेत्रं पौन विमुञ्चति ।
 न केवलं ब्रह्म हत्याप्रसक्तं च निवर्तते ॥
 (मत्स्य पृ० अ० १२२ श्लो ०१५)

अर्थ - काशी में शरीर त्याग पश्चिन्नजो काशी
 क्षेत्र को नहीं त्यागति तो वह केवल ब्रह्म-
 हत्या मात्र नहीं, अपितु पूर्वकृत पापों से
 भी निवृत्त हो जाता है। अर्थात् सभी
 पापों से वह अपावित्र मुक्त हो जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।